विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।७।।

हे धनीजी! आपकी जो ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। उसे विरह के दुःख ने पूर्ण रूप से खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सुहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।८।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता और रत्नों से जड़े हुए, सब सुख से भरे साधन खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए।
राजप्रथी पांउ दाब के, निकसी या विध होए।।९।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख सामग्री का त्याग कर आपके विरह में भटकती है।

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।१०।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और लेटने भी नहीं देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की सांस चल रही है।

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।११।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लगने पर कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।१२।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया तथा मैंने यह जो ऊपर तक वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो गया था, सो हट गया।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १३० ॥

राग धना मेवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए, मेरे दुलहा।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा।
विरहनी विलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामनी।।१।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है, इसलिए हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलख कर विरह में तड़प रही हूं तथा मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App

बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन।।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपकी अंगना आपका वियोग कैसे सहन करे? आपके बिना तो यह तन और ब्रह्माण्ड आग के समान हो गया है।

विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए।
सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।। ३ ।।

इस विरह के दुःख को विरहिणी ही जानती है। उसको फिर दुनियां के दुःख नहीं सताते। विरह की अग्नि की लपटों से सारा तन जल रहा है।

विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।। ४ ।।

हे धनी! कितने भी माया के सुख आड़े आएं, आपका विरह छूटता नहीं है। मुझे तो केवल मेरे दूल्हा दिखते हैं। तन और संसार कोई दिखाई नहीं देता अर्थात् किसी की तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।। ५ ।।

हे धनी! तेरी विरहिणी ने तो अपना घर ही विरह को बना लिया है। अब चौदह लोकों की साहिबी भी मैं आपके विरह पर कुर्बान कर दूंगी।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अकूंर रही भराए।। ६ ।।

आपका विरह आंधी की तरह आया जिससे मेरे तन की शक्ति समाप्त हो गई। आपके विरह में ऐसी-ऐसी बातें हो गईं कि उससे उठा ही नहीं गया। अब तो परमधाम का मूल अंकुर ही चित्त में रह गया है।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार।। ७ ।।

अब आपका यह विरह सागर के समान हो गया है जिसमें आपकी अंगना मछली की तरह तड़प रही है। सहारे के लिए रात-दिन दौड़ती है, किन्तु विरह के सागर में कोई सहारा नहीं मिल रहा है (अर्थात् जब आप मिलें तो विरह हटे और सहारा मिले)।

॥ प्रकरण ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ १३७ ॥

राग सोख मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।। १ ।।

हे मेरे धनी! अब आपके इश्क की याद आती है। यह इश्क सबसे बड़ा है और इसके समान कुछ भी नहीं है। एक आपके इश्क के बिना मेरी दुनियां ही उजड़ गई है।

Nijanand App